Monopoly basic concepts

COMPLIED BY

PRANAV SHEKHAR

ASSISTANT PROFESSOR

DEPARTMENT OF ECONOMICS

NOTES FOR B.A PART - 1

MONOPOLY

एकाधिकार बाजार की वह परिस्थिति होती है जहाँ केवल एक विक्रेता होता है और उसका कोई प्रतिद्वंदी नहीं होता। इसके फलस्वरूप उसके द्वारा उत्पादित वस्तु का भी कोई निकट स्थानापन्न नहीं होता। एकाधिकार में केवल एक फर्म होता है जिसका उत्पादन पर संपूर्ण नियंत्रण होता है एवं अन्य firms के लिए वहाँ उद्योग लगाना वर्जित है।

Salvatore (सल्वाट्रे) के शब्दों में एकाधिकार बाजार का वह स्वरूप है जहाँ एक फर्म या एक संगठन वस्तुओं का उत्पादन एवं वितरण कर रहा है और उसका कोई नजदीकी स्थानापन्न बाजार में मौजूद नहीं है। एकाधिकार में एक firm वस्तु की मात्रा एवं कीमत दोनों पर नियंत्रण रखता है, मगर इसका तात्पर्य यह नहीं है कि एक firm वस्तु की मात्रा एवं वस्तु की कीमत दोनों को एकसाथ निर्धारित कर सकता है। यदि firm वस्तु की कीमत का निर्धारण करता है तो उसे वस्तु की मात्रा को बाजार की माँग पर छोड़ना पड़ेगा। इसके विपरित यदि firm वस्तु की मात्रा निर्धारित करता है तो उसे वस्तु की कीमत को क्रेताओं की क्रयशक्ति पर छोड़ना पड़ेगा।

चूँकि firm कीमत को निर्धारित कर सकता है इसलिए एकाधिकार में firm को price Maker कहते हैं। यह स्थिति पूर्ण

एकाधिकार के प्रकार एवं उत्पत्ति के कारण :—

i) Patent या copyright से monopoly की उत्पत्ति

ii) राजनीतिक कच्चे माल के नियंत्रण से

iii) प्रकृति जनित एकाधिकार

iv) भौगोलिक स्थानों पर जनित

v) Licence द्वारा

सकता है। एक एकाधिकार का चेष्टा उस बिन्दु पर संतुलन एवं कीमत निर्धारण की होगी जहाँ वह सर्वाधिक लाभ कमा सके।

एकाधिकार में औसत और सिमांत आगम वक्र (माँग वक्र) दोनो नीचे की ओर गिरते नजर आते हैं (Downward Sloping)।